DAMAGE BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_176868
UNIVERSAL
LIBRARY

विषय-सूची

विषय ... पृष्ठ

१—वक्तव्य ... १

२—भूमिका ... ३

३—नाटक के पात्र ... १३

४—प्रस्तावना ... १५

५—पहला अंक ... १

६—दूसरा अंक ... २८

७—तीसरा अंक ... ३६

८—चौथा अंक ... ४३

९—पाँचवाँ अंक ... ७१

१०—छठा अंक ... ~~८६~~ ९१

वक्तव्य

काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय में जब मैं एम० ए० की परीक्षा के लिए अध्ययन कर रहा था उस समय मुझे भास के नाटकों को पढ़ने का अवसर मिला। उनके पढ़ने पर मेरा विचार हुआ कि इन १३ नाटकों की कथा Lamb's Tales from Shakespeare के ढंग पर लिखकर तैयार करूँ और पीछे उन्हें प्रकाशित करने का प्रबन्ध करूँ। मैंने कार्य्य आरम्भ भी कर दिया था और 'स्वप्न-वासवदत्ता' की कथा 'आर्य्यमहिला' में १९२४ में प्रकाशित भी हुई थी। अनेक कारणों से यह कार्य्य असम्पादित रहा। इधर प्रयाग आने पर कुछ वर्षों तक साहित्य-कार्य्य एक प्रकार बन्द-सा रहा। गत वर्ष (१९२९ में) मुझे कई अँगरेज़ी पुस्तकों का अनुवाद करना पड़ा। इसी प्रसंग में मैंने चिर अभिलाषित वासवदत्ता का भी अनुवाद कर डालना उचित समझा और उसका कार्य्य आरम्भ कर दिया। 'वासवदत्ता' के अनुवाद में एक कठिनाई मुझे यह जान पड़ी कि मैं पद्यरचना में असमर्थ था। पहले तो अनुवाद स्थगित करने की इच्छा हुई पर

ऐसा करना मुझे कष्टप्रद जान पड़ा और मैंने यह निश्चय किया कि मूल श्लोकों का अनुवाद भी गद्य में करूँ और उन्हें मुख्य कथोपकथन के वाक्यों में ऐसा मिला देने का प्रयत्न करूँ कि वे अस्वाभाविक न जान पड़ें। इस प्रयत्न में मुझे कहाँ तक सफलता हुई है यह पाठक-गण ही निश्चय कर सकते हैं।

यदि यह अनुवाद सहृदय पाठकों के मनोनीत हुआ तो शीघ्र अन्य नाटकों का अनुवाद भी समुपस्थित करने का प्रयत्न करूँगा।

प्रयाग
जून, १९३०

सत्यजीवन वर्म्मा

भूमिका

भास का उल्लेख

सन् १६०६ के पूर्व भास के किसी ग्रन्थ का पता न था। केवल काव्यों में यत्र-तत्र भास का उल्लेख-मात्र मिलता था जिससे यह पता चलता था कि इस नाम का कोई कवि कालिदास आदि के पूर्व हुआ है। महाकवि कालिदास ने अपने मालविकाग्निमित्र नामक नाटक की प्रस्तावना में भास का उल्लेख यों किया है—

"प्रथितयशसां **भास**सौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य"

कवि बाणभट्ट अपने हर्षचरित्र में लिखते हैं—

"सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभूमिकैः।
सपताकैर्यशो लेभे **भासो** देवकुलैरिव॥"

राजशेखर 'सूक्तिमुक्तावली' में भास और उनके नाटक 'स्वप्न-वासवदत्ता' का उल्लेख करते हैं—

"**भासनाटक** चक्रेऽपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।
स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः॥"

'प्रसन्नराघव' में भासकवि के गुणों का वर्णन यों किया है—

"**भासो** हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।"

भास के ग्रंथ

महामहोपाध्याय पंडित टी० गणपति शास्त्री को सन् १९०९ में ट्रावंकोर राज्य की ओर से संस्कृत हस्तलिखित ग्रंथों की खोज करते समय मतालिकार मठ में कुछ नाटकों की हस्तलिखित प्रतियां मिलीं। इनमें मलाया लिपि में लिखे निम्नलिखित दस रूपक थे—

स्वप्न नाटक	अविमारक
प्रतिज्ञा नाटक	बाल-चरित्र
पंचरात्र	मध्यकायोग
चारुदत्त	कर्णभार
दूतघटोत्कच	उरुभंग

इनके अतिरिक्त एक ११ वां रूपक था जो असमाप्त था। पीछे दो और नाटकों का पता चला, वे भी उन्हीं दसों की भांति थे। इनका नाम 'अभिषेक' और 'प्रतिभा' नाटक था। इस भांति इन अश्रुत-पूर्व १३ नाटकों का पता चला।

ग्रंथकर्त्ता

इन रूपकों की रचना साम्य को देखते हुए यह मानना पड़ेगा कि ये एक ही कवि की रचनाएँ हैं। स्वप्न-वासवदत्ता की रचना भास ने की, ऐसा माना जाता है। बाणभट्ट के कथन से यह पुष्ट होता है कि

भास के नाटकों में सूत्रधार से आरम्भ होता है। इन १३ रूपकों को देखने से उनमें यह विशेषता पाई जाती है। अतः यह सिद्ध है कि ये रूपक भास ही की रचनाएँ हैं। पाश्चात्य विद्वान् अभी तक इसे निश्चित रूप से मानने के लिए तैयार नहीं हैं कि ये रचनाएँ भास की ही हैं। कुछ भी हो भास की रचना मानने के विरुद्ध कोई विशेष प्रमाण नहीं दिया गया है अतः पंडित गणपति शास्त्री का मत ठीक माना जा सकता है।

भास का समय

भास के समय के विषय में बड़ा मतभेद है। गणपति शास्त्री ने बाह्य और अभ्यन्तर प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि भास वैयाकरण पाणिनि के पूर्व हुए, पर कौटिल्य (३ शताब्दी ई० पूर्व) के पहले उनका होना शास्त्रीजी ने सिद्ध किया है। पाश्चात्य विद्वानों का मत इसके विरुद्ध है। कीथ (Keith) का मत है कि भास ईस्वी तीसरी शताब्दी के आस पास हुए।

अन्य नाटककारों पर भास की छाया

भास के नाटकों के भाव, भाषा और शैली का प्रभाव पीछे की कृतियों पर पड़ा है। 'शकुन्तला' और 'मृच्छ-कटिक' में इसका प्रमाण मिलता है। कवि शूद्रक का मृच्छकटिक भास के 'चारुदत्त' का परिवर्धित संस्करण

जान पड़ता है। महाकवि कालिदास के 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' में अनेक सुन्दर भाव और उक्तियां भास के स्वप्न-वासवदत्ता की छाया जान पड़ती हैं। यह विषय अध्ययन योग्य है।

स्वप्न-वासवदत्ता

भास के नाटकों में स्वप्न-वासवदत्ता शैली आदि को देखते हुए प्रौढ़ माना जाता है। इसके अनुवाद योरप के मुख्य मुख्य भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इस नाटक की रचना अन्य नाटकों से क्लिष्ट मानी जाती है। यह रंगमंच के योग्य भी समझा जाता है।

कथा

उदयन और वासवदत्ता का आख्यान प्रसिद्ध कथा-सरितसागर में छंदोबद्ध है। मानना पड़ेगा कि भास ने अपने नाटक का 'वस्तु' (Plot) इसी से लिया होगा। कहीं कहीं उन्हें नाटक योग्य बनाने के लिए उसमें परिवर्त्तन अवश्य करना पड़ा है। कथा-सरित्सागर के अनुसार कथा यों हैं—

महाराज उदयन कौशांबी आकर मंत्रियों के हाथ में राज्यभार छोड़कर रानी वासवदत्ता के प्रेम में लीन हो जाते हैं। मंत्रियों को राजा की यह उदासीनता और कामासक्ति अच्छी नहीं लगी। इस हेतु वे उपाय सोचने

लगे कि किसी तरह राजा सचेत हों और राज्य का विस्तार हो। इस उद्देश की पूर्त्ति में एक आपत्ति थी। वह थी मगधराज का विरोध। मंत्रियों ने उपाय सोचना आरंभ किया। सौभाग्य से मगधराज 'दर्शक' की बहन 'पद्मावती' कुमारी थी। वह सद्गुण और सुशीलता के लिए प्रसिद्ध थी। मंत्रियों ने सोचा यदि किसी भांति पद्मावती का विवाह महाराज 'उदयन' से हो जाय तो सारा काम बन जाय। इस हेतु वासवदत्ता को हटाना आवश्यक था। मंत्रियों ने वासवदत्ता को मिलाया। वह राज्य के कल्याण के लिए सब कुछ करने को तैयार हो गई। अब मंत्रियों के मन की बात हुई।

नाटक की कथा का संक्षेप यों है—

लावाणक नामक गांव में उदयन वासवदत्ता के साथ रह कर मृगया का आनंद ले रहा था। मंत्रियों को अवसर हाथ लगा। एक दिन राजा शिकार को गया। उसकी अनुपस्थिति में मंत्री यौगन्धरायण रानी को लेकर चलता हुआ और उस गांव में आग लगा दी गई। जब राजा लौटा तो यह प्रसिद्ध कर दिया गया कि आग में रानी वासवदत्ता और मंत्री यौगन्धरायण दोनों जल कर मर गये। राजा इस पर दुखी हुआ।

इधर यौगन्धरायण और वासवदत्ता तपस्वियों का भेष बनाये मगध पहुँचे और वहाँ तपोवन में कुमारी

पद्मावती से साक्षात् हुआ। यौगन्धरायण ने वासवदत्ता को अपनी बहन बतला कर पद्मावती के हाथों यह कह कर सौंपा कि 'इसका पति परदेश गया है और मैं भी पर्यटन करने जाता हूँ, मेरे लौटते तक कुमारी अपने पास रखें।' कुमारी पद्मावती ने स्वीकार कर लिया। वासवदत्ता उनके साथ रहने लगी। इसी बीच महाराज उदयन मगधराज के यहां आते हैं और पद्मावती से विवाह करना स्वीकार करते हैं। विवाह करके वे अपने राज को लौटते हैं। वासवदत्ता भी साथ जाती है। वहां पहुँच कर उदयन को एक दिन वासवदत्ता की वीणा 'घोषवती' का शब्द सुनाई पड़ता है। महाराज स्वयं उस ध्वनि के सहारे बजानेवाले के पास पहुँचते हैं। पूछने पर उन्हें ज्ञात होता है कि यह वीणा उस बजानेवाले को नर्मदा नदी के तट पर पड़ी मिली थी। राजा उससे वीणा लेकर वासवदत्ता के शोक में मूर्च्छित हो जाता है, और चेत आने पर विलाप करता है। इतने में उसे समाचार मिलता है कि महाराज [illegible] (वासवदत्ता के पिता) और महारानी अंगारवती (वासवदत्ता की माता) द्वारा भेजे गये कंचुकी रैभ्यस और दाई वसुन्धरा आई है। महाराज उदयन उनसे मिलते हैं और महारानी पद्मावती से भी मिलने के लिए आग्रह करते हैं। कंचुकी महाराज का संदेश सुनाता है।

दाई वसुन्धरा कहती है, "महाराज ! हमारी महारानी अंगारवती ने कहा है कि वासवदत्ता तो अब हैं नहीं। आपको अपनी कन्या देने का पहले ही हमने निश्चय किया था। इसी हेतु आपको उज्जैनी लाये थे। पर आप संतोष न कर उसे ले भागे। अपनी चपलता से विवाह की प्रतीक्षा भी न की। अतः हमने दोनों की अनुपस्थिति में चित्र बनवाकर दोनों का विवाह कराया। वे ही दोनों चित्र आपको भेजती हूँ।" पद्मावती कुतूहलवश वासवदत्ता का चित्र देखती है और उसे अवंतिका की आकृति से मिलता-जुलता पाकर राजा से पूछती है, "क्या यह आर्य्या वासवदत्ता का सच्चा चित्र है ?" राजा कहता है, "चित्र क्यों ? यह तो साक्षात् वासवदत्ता ही हैं।" पद्मावती राजा का चित्र देखती है और उसे यथार्थ बना हुआ पाती है। तब वह कहती है, "महाराज ! उसी चित्र से मिलती जुलती आकृतिवाली एक स्त्री मेरे साथ रहती है। उसका नाम अवंतिका है। उसे एक ब्राह्मण अपनी बहन कहकर मेरे पास छोड़ गया था कि उसका पति परदेश गया है और वह भी पर्य्यटन पर जा रहा है, अतः तब तक के लिए उसे मैं अपने पास रख लूँ।"

यह सुनकर राजा विस्मय में पड़ता है। इतने में प्रतिहारी समाचार देती है कि एक ब्राह्मण आया है और अपनी बहन महारानी पद्मावती से माँगता है।

राजा उसे बुलाने की आज्ञा देता है। ब्राह्मण आता है और राजा को आशीर्वाद देता है। राजा को उसकी वाणी परिचित सी मालूम होती है। पद्मावती अवंतिका को लेकर आती है। उसे देख वसुन्धरा कहती है यह तो राजकुमारी वासवदत्ता हैं। ब्राह्मण कहता है, "नहीं! नहीं! यह तो मेरी बहन है!" राजा कुछ निश्चय नहीं कर पाता। तब यौगंधरायण और वासवदत्ता अपने को प्रकट करते हैं और राजा का अभिवादन करते हैं। राजा यौगंधरायण की कार्य्यकुशलता की प्रशंसा करता है और पद्मावती वासवदत्ता के पैर पड़ कर अनजान में किये हुए सखीभाव शिष्टाचार के लिए क्षमा मांगती है। वासवदत्ता उसे सप्रेम उठा लेती है। उसके पश्चात् सब उज्जैनी जाने का प्रबंध करते हैं।

कवि का उद्देश और चरित्र चित्रण—

इस नाटक के पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि महाकवि भास का उद्देश इसके द्वारा केवल वासवदत्ता का स्वार्थत्याग, और उदयन का सच्चा प्रेम प्रदर्शन करना था। सारी कथा अशिथिल, अभिन्न रस और आदर्श प्रेम का ज्वलंत प्रमाण है जिसके हेतु जो कुछ त्याग किया जाय थोड़ा है।

कवि ने चरित्र-चित्रण में बड़ी ही कुशलता दिखलाई है। प्रत्येक कथोपकथन सरस, सुन्दर और सारगर्भित है। प्रत्येक वाक्य से चरित्र का कोमल विकास होता है। नाट्यकला की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण ही नहीं वरन् कवि की अद्भुत प्रतिभा का प्रमाण है। नायिका वासवदत्ता का चरित्र ऐसी सुन्दरता से चित्रित हुआ है कि सारे नाटक में वह कोमलता, करुणा, पतिभक्ति, त्याग और शान्ति की प्रतिमा दिखाई पड़ती है। सारे नाटक में उदयन आदर्श प्रेमी के रूप में दिखाई पड़ता है। उनमें दुष्यन्त का सा नृप-भाव नहीं है, उनमें 'राम' का-सा एक-पत्नीव्रत-भाव लक्षित होता है। पद्मावती उदारता, सुशीलता और कोमल प्रेम की मूर्त्ति है। उसमें सपत्नी के प्रति साधारण स्त्रियों की सी ईर्ष्या द्वेष नहीं है। यौगन्धरायण आदर्श मंत्री, चतुर, राजकार्य्य में कुशल और राजा का हितैषी है। उसके प्रति राजा के हृदय में कृतज्ञता के भाव हैं।

नाटक के पात्र

(१) पुरुष—

राजा—वत्सराज उद्यन

यौगन्धरायण—उद्यन का मंत्री

विदूषक—वसन्तक, वत्सराज का विश्वासपात्र।

विद्यार्थी—लावाणक में पढ़नेवाला।

कंचुकी—राजकुल का कंचुकी (द्वारपाल)

संभाषक }
भट } पद्मावती के नौकर

(२) स्त्रियां—

वासवदत्ता—उद्यन की पहली रानी, अवन्तिका के भेष में।

पद्मावती—मगध के राजा महाराज दर्शक की बहन।

तापसी

चेटी—पद्मावती की दासी।

मधुकारिका }
कुंजरिका } पद्मावती की दासियां।

विजया—उद्यन की द्वार-पालिका

वसुन्धरा—वासवदत्ता की दाई।

सूत्रधार (प्रस्तावना में), तपस्वी गण, कंचुकी और दरबारी गण।

प्रस्तावना

[सूत्रधार आता है]

सूत्रधार

उदयनवेन्दु सर्वणावासवदत्ता वलौ वलस्य त्वाम।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम ॥

उपस्थित सज्जनों से निवेदन करना चाहता हूँ—ऐं ! यह क्या ? मैं अभी कुछ कह भी न पाया कि यह शब्द कैसा सुनाई पड़ता है ? अच्छा, देखता हूँ क्या बात है ।

[नेपथ्य में]

हटो, हटो, रास्ते से हट जाओ ! हटो सामने से !

सूत्रधार

अच्छा, अब समझा मैंने—राजकुमारी को ले जानेवाले, मगधराज के स्वामिभक्त नौकर उद्दंडता से तपोवन में आये हुए लोगों को हटा रहे हैं ।

[जाता है]

अंक पहला

[दो सिपाही आते हैं]

दोनों सिपाही

हटो ! बढ़ो ! रास्ता करो ।

[संन्यासी-भेष में यौगन्धरायण और अवन्तिका के भेष में वासवदत्ता आती है]

यौगन्धरायण

[सुनकर]

क्या यहाँ भी हटो बढ़ो ? कौन है यह उजड्ड-गवाँर जो चार दिन के वैभव से अंधा होकर इस तपोवन में देहात की तरह रोब जमा रहा है ? क्यों परेशान करता है इस तपोवन के रहनेवाले बल्कलधारी, कन्दमूल खानेवाले शान्त तपस्वी लोगों को ?

वासवदत्ता

भइया ! कौन है यह, इस प्रकार हमें हटा रहा है ?

यौगन्धरायण

बहन ! होगा कोई अधर्मी ।

वासवदत्ता

यह नहीं—क्या मुझे भी यहाँ से हटना पड़ेगा ?

यौगन्धरायण

बहन ! अनजान में देवताओं की भी दुर्गति होती है ।

वासवदत्ता

भइया !—मुझे थकान से अधिक तो इस अनादर से कष्ट हो रहा है ।

यौगन्धरायण

बहन ! इन सबका विचार तो तुमने पहले ही छोड़ दिया है । अब इसकी चिन्ता ही क्या

करनी ? एक बार तो तुमने भरपेट सुख भोग लिया है, स्वामी के विजय होते तुम्हारा फिर वैसा ही मान हो जायगा। भाग्य तो पहिये की भाँति घूमता ही रहता है।

दोनों सिपाही

हटो ! हटो ! रास्ते से हट जाओ !

[कंचुकी आता है]

कंचुकी

अरे हटाना वटाना नहीं, सम्भाषक ! देखो ! राजा की बदनामी करोगे ? कहीं तपोवन के वासियों के साथ ऐसा व्यवहार होता है ? शहर के रोबदाब से बचने ही के लिए तो ये महात्मा लोग आकर वन में वास करते हैं।

दोनों सिपाही

अच्छा ! जी अच्छा !

[जाते हैं]

यौगन्धरायण

ख़ैर ! इसका आना अच्छा ही हुआ । बहन ! चलो, ज़रा उसके पास चल कर पूछें तो ।

वासवदत्ता

अच्छा, चलो भइया !

यौगन्धरायण

[कंचुकी के पास जाकर]

क्यों जी ! यहाँ से लोग हटाये क्यों जा रहे हैं ?

कंचुकी

हाँ ! तपस्वीजी—

यौगन्धरायण

[अपने आप]

तपस्वी ? ख़ूब ! आदत न होने के कारण कभी कभी मैं भूल जाता हूँ ।

कंचुकी

सुनिए बात यह है कि हमारे महाराज जिन्हें लोग दर्शक कहते हैं, उनकी बहन हैं—राजकन्या

पद्मावती। वह अपनी माता—महारानी महादेवी से मिलने आई थीं। वह इसी तपोवन में रहती हैं। उनकी आज्ञा लेकर अब राजकन्या राजगृह जा रही हैं—इसलिए आज उनका विचार इसी आश्रम में दिन को विश्राम करने का है। आप लोग आनन्द से अपना काम करें, वन से फल-फूल, कन्दमूल, ईंधन, जल आदि काम की चीज़ें ले आवें। कुमारी तपोवन के नियमों का उल्लंघन न करेंगी। उनके कुल की सदा से यह रीति चलती आई है।

यौगन्धरायण

[आप ही आप]

अच्छा! यही है मगधराज की कन्या—कुमारी पद्मावती, जिसके विषय में पुष्पभद्रक आदि ज्योतिषियों ने कहा है कि वह हमारे महाराज की रानी होगी। आदमी के मन में राग द्वेष दोनों उत्पन्न होते हैं, पर अपने स्वामी

की भार्य्या देखने की उत्कट अभिलाषा के कारण मुझमें उसके प्रति बड़ी भक्ति उत्पन्न हो रही है।

वासवदत्ता

[आप ही आप]

राजकन्या जान कर मुझमें भी उसके प्रति बहनापे का सा भाव उठ रहा है।

[पद्मावती अपने साथियों और दासी के साथ आती है]

दासी

इधर से—राजकन्या ! इधर से आश्रम में प्रवेश करें।

[एक ओर बैठी हुई एक तापसी दिखाई पड़ती है]

तापसी

आशीर्वाद है राजकन्या को !

वासवदत्ता

[अपने आप]

यही है राजकन्या ! है तो उसी के योग्य रूप रंग।

पद्मावती

माईजी प्रणाम !

तापसी

आयुष्मती हो ! बेटी ! आओ भीतर, तपोवन में तो अतिथियों को आना ही चाहिए।

पद्मावती

बस ठीक है, माईजी ! बड़े मज़े में हूँ, बड़ी कृपा है आपकी।

वासवदत्ता

[अपने आप]

हुँ ! देखने ही में नहीं वरन् बात-चीत में भी यह सुघड़ है।

तापसी

[दासी से]

बेटी ! हमारे महाराज की बहन के विवाह की कहीं बात-चीत है ?

दासी

हाँ, माँजी ! उज्जैनी के राजा प्रद्योत ने अपने लड़के के लिए आदमी भेजा है ।

वासवदत्ता

[अपने आप]

खूब ! अब तो अपनी सगी हुई जाती है ।

तापसी

उसके रूप के अनुरूप ही है । दोनों ही राजकुल-प्रतिष्ठित हैं ।

पद्मावती

देखो जी ! किसी तपस्वी को हमारी सहायता की आवश्यकता तो नहीं है ? जाकर तपस्वियों को यहाँ बुला तो लो । मैं जानना चाहती हूँ—किसी को किसी वस्तु की कमी तो नहीं है । तुम भी पूछ लो जाकर हर एक से ।

कंचुकी

जैसी आपकी आज्ञा, राजकन्या ! आश्रम के रहनेवाले लोग ! सुन लें आप सब ! हमारी राजकन्या जो इस समय यहाँ आश्रम में उपस्थित हैं आप लोगों के व्यवहार से संतुष्ट होकर धर्मार्थ धन से आपकी सहायता करने के लिए आप सबको बुला रही हैं । जिसको घड़े की ज़रूरत हो, जिसे कपड़े की आवश्यकता हो, जिसे विद्या समाप्त करके गुरु-दक्षिणा देने के हेतु द्रव्य की कमी हो, वे सब लोग धर्मात्मा मगध-राजपुत्री के पास जाकर अपना प्रयोजन कहें और जिसे जो माँगना हो माँगे ।

यौगन्धरायण

[अपने आप]

अच्छा ! अवसर तो हाथ लगा ।

[प्रकट]

हाँ भाई ! मुझे आवश्यकता है ।

पद्मावती

जान पड़ता है मेरा आश्रम में आना सफल हुआ।

तापसी

इस तपोवन के सभी लोग संतुष्ट हैं। यह निश्चय कोई परदेसी है ?

कंचुकी

हाँ ! क्या चाहते हैं आप ?

यौगन्धरायण

यह मेरी बहन है। इसका पति परदेस में है। मैं चाहता हूँ कुमारी इसे कुछ काल के लिए अपने पास रख लें। मैं धन नहीं माँगता, न वस्त्र चाहता हूँ, न अपने सुख का सवाल करता हूँ। भीख माँगने के लिए मैंने यह भेष नहीं धारण किया है। केवल यह जान कर राजकन्या धर्मात्मा हैं, धीर हैं, गंभीर हैं, मैं सोचता हूँ कि उनकी संरक्षा में मेरी बहन कुशल से रहेगी।

वासवदत्ता

[अपने आप]

हुँ ! आर्य्य यौगन्धरायण मुझे इसके पास छोड़ना चाहते हैं। ख़ैर, वह जो करेंगे सोच समझ कर ही करेंगे।

कंचुकी

कुमारी ! इसकी आशा तो बड़ी भारी है। यह कैसे हो सकता है ? धन दे देना आसान है, प्राण, तपस्या दे देनी सहज है। सब कुछ देना संभव है—पर किसी के धरोहर की रक्षा—यह तो बड़ा कठिन काम है।

पद्मावती

यह कहकर कि जिसे जो माँगना हो माँगे—अब हिचकना ठीक नहीं। जो यह कहते हैं वैसा ही करो।

कंचुकी

ठीक ही कहती हैं राजकुमारी !

दासी

जय हो कुमारी की! आपने बात की बड़ी सच्ची हैं।

तापसी

चिरंजीव हो, बेटी!

कंचुकी

[यौगन्धरायण के समीप जाता है]

बहुत अच्छा राजकन्या! सुनिए! राजकन्या आपकी बहन को अपनी संरक्षा में रखना स्वीकार करती हैं।

यौगन्धरायण

बड़ी कृपा है राजकुमारी की! बहन, राजकुमारी के पास जाओ।

वासवदत्ता

[अपने आप]

क्या किया जायगा! अपना दुर्भाग्य!

पद्मावती

अच्छा, अच्छा ! अब तो आप हमारी सखी हुईं न ?

तापसी

ऐं ! देखने से तो जान पड़ता है यह भी किसी राजा की बेटी है ।

दासी

ठीक कहती हैं, माँजी ! मुझे भी ऐसा ही जान पड़ता है कि इसने अच्छे दिन देखे हैं ।

यौगन्धरायण

[अपने आप]

अब तो मेरा आधा बोझ हलका हुआ । जैसी मंत्रियों के साथ सलाह हुई थी वैसा ही हुआ । राजा के फिर प्रतिष्ठा पाने पर यही पद्मावती उसके सच्चरित्र की साक्षी होगी, क्योंकि पद्मावती का विवाह निश्चय राजा से होगा

हाँ—ऐसा उन ज्योतिषियों ने कहा भी है—उन्हीं ने तो हमारी विपत्ति की बात भी पहले ही बतला दी थी। इसी पर विश्वास करके मैंने यह चाल चली है। भला कहीं इन लोगों की बात झूठी ठहरती है ?

[एक विद्यार्थी आता है]

विद्यार्थी

[ऊपर देखकर]

दोपहर तो हो गया। थक भी गया हूँ। कहीं आराम करूँ अब ?

[इधर-उधर चलता है]

अच्छा ! यहाँ ज़रूर तपोवन है आस-पास। तभी तो हरिण निश्चिन्त होकर विचर रहे हैं। वृक्षों पर फल लदे हुए हैं, सामने भूरी गायों के झुंड मज़े में चर रहे हैं। आस-पास कहीं भूमि भी जुती हुई नहीं दिखाई पड़ती। यह सामने कहीं कहीं धुआँ भी ऊपर उठता दिखाई

पड़ता है। हो न हो यह किसी तपस्वी का स्थान है। अच्छा, चलूँ भीतर।

[प्रवेश करता है]

अरे! यहाँ तो एक ऐसा आदमी दिखाई पड़ता है जो तपोवन का वासी नहीं जान पड़ता।

[अन्यत्र देख कर]

परन्तु, यहाँ तपस्वी भी तो दिखाई पड़ते हैं। अच्छा, चलें इन्हीं के पास। अरे! यहाँ तो स्त्रियाँ हैं!

कंचुकी

आ जाओ निडर, कोई बात नहीं, तपोवन में सबको आने की आज्ञा है।

वासवदत्ता

उँह!

पद्मावती

[अपने आप]

अच्छा, यह स्त्री किसी के सामने नहीं होना चाहती। इसकी देख-रेख तो मेरे लिए कठिन न होगी।

कंचुकी

सुनिए! हम लोग यहाँ अभी ही आये हैं। आइए, हम लोगों के साथ ही ठहरिए।

विद्यार्थी

[आचमन करके]

अच्छा, अच्छा, कोई हरज नहीं। अब तो मैं सुस्ता चुका।

यौगन्धरायण

भाई! कहाँ से आ रहे हैं आप? जायँगे कहाँ? आपका स्थान कहाँ है?

विद्यार्थी

मैं आता हूँ राजगृह से। वत्स देश के लवणाक नामक स्थान में मैं वेद पढ़ने के विचार से रहता था।

वासवदत्ता

[अपने आप]

आह ! लवणक का नाम सुनते ही पुरानी बातें याद आ जाती हैं ।

यौगन्धरायण

हाँ, तो समाप्त कर चुके अपनी पढ़ाई आप ?

विद्यार्थी

नहीं, अभी तो नहीं ।

यौगन्धरायण

पढ़ाई समाप्त नहीं हुई तो चले क्यों आये ?

विद्यार्थी

वहाँ एक बड़ी भारी दुर्घटना होगई ?

यौगन्धरायण

सो क्या ?

विद्यार्थी

उसी गाँव में उदयन नाम का राजा रहता था ।

यौगन्धरायण

हाँ ! महाराज उदयन का नाम तो मैंने भी सुना है। क्या हुआ उनको ?

विद्यार्थी

वह अवन्ति के राजा की पुत्री—अपनी रानी वासवदत्ता को बहुत मानता था।

यौगन्धरायण

मानना ही चाहिए। हाँ, तब ?

विद्यार्थी

एक दिन राजा शिकार पर गया था। उसकी अनुपस्थिति में रानी गाँव में आग लग जाने से जल मरी।

वासवदत्ता

[अपने आप]

झूठ ! बिलकुल झूठ ! कहाँ ? मैं अभागी तो जीती-जागती हूँ !

योगन्धरायण

हाँ, तब ? तब ?

विद्यार्थी

यौगन्धरायण नामक उसका मंत्री भी बचाते समय उसमें जलकर मर गया।

यौगन्धरायण

सच ! जल्दी तो कहो ! क्या हुआ तब ?

विद्यार्थी

लौटने पर राजा को जब यह सब मालूम हुआ तो उसे उन दोनों के मरने का बड़ा दुख हुआ और वह उस आग में कूदकर प्राण देने पर उतारू होगया। बड़ी मुश्किल से मंत्रियों ने उसे रोका।

वासवदत्ता

[अपने आप]

जानती हूँ, मैं समझती हूँ कितनी मेरे स्वामी को मेरे लिए लगन है।

यौगन्धरायण

अच्छा ! हाँ, तब ?

विद्यार्थी

तब राजा उसके शरीर पर के अधजले आभूषणों को हृदय से लगाकर शोक से मूर्च्छित होगया ।

सब के सब

हाय ! हाय !

वासवदत्ता

[अपने आप]

अब तो यौगन्धरायण के मन की बात हुई ।

दासी

राजकुमारी, यह रो रही हैं ।

पद्मावती

बड़ा दयालु हृदय है इनका ।

यौगन्धरायण

हाँ ! हाँ ! मेरी बहन का स्वभाव ही ऐसा है । हाँ, तब क्या हुआ ?

विद्यार्थी

तब कुछ देर बाद राजा को होश आया ।

पद्मावती

[अपने आप]

खैर ! कुशल है । बेहोश होना सुनकर तो मेरे प्राण सूख गए थे ।

यौगन्धरायण

हाँ ! तब ?

विद्यार्थी

हाँ ! तब राजा एकाएक उठकर पागल की भाँति चिल्ला चिल्ला कर रोने लगा । हा वासवदत्ता ! हा अवन्तिकुमारी ! हा प्रिये ! हा प्राणप्यारी ! भूमि में लोटने के कारण उसका

सारा शरीर धूल से भर गया था। और क्या कहूँ उसका दुःख चकवे से भी बढ़ा चढ़ा है। इतना दुख तो शायद ही किसी को स्त्री के मरने पर हुआ हो। धन्य है वह स्त्री पति जिसका इतना आदर करता हो! सच पूछो तो आग में जल जाने पर भी ऐसी स्त्री जीती जागती के समान है।

यौगन्धरायण

क्यों? किसी मंत्री ने राजा को समझाया बुझाया नहीं?

विद्यार्थी

क्यों नहीं? मंत्री रुमण्वान् ने अपने भर-सक बहुत समझाया-बुझाया। बेचारा राजा के दुख से आप भी दुखी है। अपने स्वामी की भाँति न वह खाता है न ठिकाने से कपड़े पहनता है। रात दिन रोते रोते उसका मुँह सूख गया है। जब देखो तब वह राजा ही की देख-रेख में लगा रहता है।

अगर संयोग से राजा की मृत्यु होगई तो उसके बचने में भी संदेह है।

वासवदत्ता

[अपने आप]

सौभाग्य से मेरे स्वामी अच्छे के हाथ में पड़े हैं।

यौगन्धरायण

[आप ही आप]

बेचारे रुमण्वान् पर बड़ा बोझ आ पड़ा! मेरे सिर भी तो है पर उसमें थोड़ा आराम है—उस बेचारे की तो रात दिन की परेशानी है। उसी के भरोसे तो राजा हैं, उसी पर सब कुछ निर्भर है।

[प्रकट]

हाँ जी! तो अब राजा का दुख कुछ कम हुआ?

विद्यार्थी

यह तो मुझे नहीं मालूम। बड़ी कठिनाई से मंत्री राजा को उस गाँव से लिवा गया। जाते समय वह बराबर यही कह कह कर विलाप करता था—'यहाँ मैं उसके साथ हँसता था!' 'यहाँ मैंने उससे बातचीत की थी!' 'यहाँ हम दोनों झगड़ पड़े थे!' 'यहाँ हम दोनों साथ सोये थे!'—इत्यादि। राजा के चले जाने पर गाँव ऐसा उजाड़ हो गया, मानो आकाश हो जिसमें चाँद और तारे न हों। इसी लिए मैं भी वहाँ से चला आया।

तापसी

राजा तो गुणी जान पड़ता है, परदेसी तक उसकी प्रशंसा करते हैं।

दासी

राजकुमारी, भला वह काहे को फिर से ब्याह करेगा?

पद्मावती

[अपने आप]

यही तो मैं भी जानना चाहती थी।

विद्यार्थी

अब तो आज्ञा दीजिए—चलूँ।

वासवदत्ता और यौगन्धरायण

अच्छा, जाइए आप का काम सिद्ध हो!

विद्यार्थी

चलता हूँ।

[जाता है]

यौगन्धरायण

अब तो मैं भी राजकन्या की आज्ञा से चलना चाहता हूँ।

कंचुकी

राजकुमारी! आप की आज्ञा से यह जाना चाहते हैं।

पद्मावती

आप की बहन आपके चले जाने पर अकेली हो जायँगी।

यौगन्धरायण

आप जैसे गुणी लोगों के साथ रह कर वह उदास न रहेगी।

[कंचुकी की ओर देखकर]

अच्छा, मैं चला अब।

कंचुकी

अच्छा, जाइए आप। फिर दर्शन दीजिएगा।

यौगन्धरायण

अवश्य !

[जाता है]

कंचुकी

अब तो आराम करने का समय हो गया।

पद्मावती

माईजी ! प्रणाम करती हूँ।

तापसी

पुत्री, अपने योग्य वर पाओ।

वासवदत्ता

माईजी ! प्रणाम !

तापसी

शीघ्र अपने स्वामी से मिलो।

वासवदत्ता

कृपा है आप की !

कंचुकी

अब चलना चाहिए, इधर से—इधर से—राजकन्या ! देखिए—चिड़ियाँ बसेरा लेने लगीं; तपस्वी लोग स्नान करने चले गये; आग जल उठी, धुआँ तपोवन के ऊपर मँडराने लगा है, वह देखिए सूर्य्यदेव भी अपने किरणों को बटोर कर अपने रथ को धीरे धीरे अस्ताचल के शिखरों से नीचे उतारने लगे।

[सब जाते हैं]

अंक दूसरा ।

[दासी आती है]

दासी

कुंजरिका ! कुंजरिका ! कहाँ हैं कुमारी पद्मावती ? क्या कहती है "यहाँ माधवीलता के मण्डप में गेंद खेल रही हैं" ? अच्छा, मैं वहीं आती हूँ ।

[घूमकर देखती है]

अच्छा, यह आ रही हैं गेंद से खेलती हुई कुमारी स्वयं । उनके करनफूल हवा में कैसे झूल रहे हैं ? परिश्रम के कारण चेहरे पर पसीने की बूँदें दिखाई पड़ती हैं । चलूँ मैं ही उनके पास ।

[जाती है]

[पद्मावती गेंद से खेलती हुई वासवदत्ता और अन्य सहेलियों के साथ आती है ।]

वासवदत्ता

सखि ! यह लो गेंद ।

पद्मावती

बहन ! बस, अब नहीं ।

वासवदत्ता

सखि ! इतनी देर तक गेंद के साथ खेलने से तुम्हारे हाथ तो ऐसे लाल हो गये हैं मानो तुम्हारे हैं ही नहीं !

दासी

खेल लें, और खेल लें राजकुमारी ! बालापन का खूब आनन्द ले लें !

पद्मावती

बहन, तुम तो मुझे बना रही हो ।

वासवदत्ता

न सखि ! बिल्कुल नहीं । सच, आज तुम बड़ी ही सुन्दर लग रही हो । चारों ओर मुझे मानो तुम्हारे ही वरमुख दिखाई पड़ते हैं !

पद्मावती

रहने भी दो, मुझे बहुत बनाओ मत ।

वासवदत्ता

अच्छा, महासेन की भावी पुत्रवधू, मैं कुछ न कहूँगी ।

पद्मावती

महासेन कौन ?

वासवदत्ता

वही उज्जैनी के प्रद्योत जिनकी सेना बड़ी सी है ।

दासी

राजकुमारी उनसे थोड़े ही ब्याह करेंगी ?

वासवदत्ता

हाँ, तब किससे ?

दासी

वत्सराज उदयन से । राजकन्या उसके गुणों पर मोहित हैं ।

वासवदत्ता

[आप ही आप]

अच्छा ! मेरे स्वामी के साथ ब्याह करना चाहती है !

[प्रगट]

ऐसा क्यों ?

दासी

क्योंकि उसके हृदय में बड़ा प्रेम है।

वासवदत्ता

[अपने आप]

हाँ, ठीक ! ठीक ! मैं भी इसी गुण पर लट्टू हो गई थी।

दासी

कुमारी, कहीं राजा विरूप हो तो ?—

वासवदत्ता

नहीं, नहीं ! वह सुन्दर है।

पद्मावती

तुम्हें कैसे मालूम ?

वासवदत्ता

[अपने आप]

देखो तो, स्वामी के प्रति प्रेम के कारण मैंने गड़बड़ कर दिया न। अच्छा ठीक।

[प्रकट]

सखि, उज्जैनी के लोग ऐसा कहते हैं।

पद्मावती

ठीक ! उज्जैनी में तो सभी ने ही उसे देखा होगा। सुन्दरता सभी को अच्छी लगती है।

[राजकन्या की दाई आती है]

दाई

जय हो कुमारी की ! रानी बेटी ! तुम्हारी सगाई हो गई।

वासवदत्ता

किससे, दाईजी ?

दाई

वत्सराज उदयन से।

वासवदत्ता

हैं तो कुशल से महाराज ?

दाई

हाँ, कुशल से—आये हैं यहाँ और राजकन्या से विवाह करना स्वीकार किया है।

वासवदत्ता

कैसा अन्धेर है !

दाई

अन्धेर कैसा ?

वासवदत्ता

क्यों, अन्धेर नहीं तो और क्या ? कहाँ वह रोना धोना ! कहाँ यह एकाएक विवाह करने की तैयारी !

दाई

अजी, बड़े आदमियों के दिल पर शास्त्रों के कथन का बड़ा प्रभाव पड़ता है। वे जल्दी अपना शोक भूल जाते हैं।

वासवदत्ता

दाईजी ! क्या राजा ने खुद विवाह के लिए कहला भेजा है ?

दाई

नहीं, नहीं, वह यहाँ किसी काम से आये थे। हमारे महाराज ने विद्या, वय और रूप देख कर, उन्हें योग्य वर समझ, स्वयं विवाह की बात उठाई थी।

वासवदत्ता

[अपने आप]

हाँ, तब तो मेरे स्वामी का कुछ दोष नहीं है।

[दूसरी दासी आती है]

दासी

उठिए ! उठिए ! जल्दी कीजिए ! हमारी महारानी की आज्ञा है कि आज दिन अच्छा है—आज ही राजकन्या को कंगन बाँधा जाय।

वासवदत्ता

[अपने आप]

जितनी ही ये लोग जल्दी कर रहे हैं उतनी ही मेरी घबराहट बढ़ती जा रही है।

दाई

चलो, राजकुमारी चलो!

[सब जाते हैं]

अंक तीसरा

[वासवदत्ता सोचती हुई आती है]

वासवदत्ता

भीतर आँगन में विवाह की भीड़भाड़ में पद्मावती को छोड़ कर मैं अकेले यहाँ प्रमोदवन में अपने दुर्भाग्य के दुख को मिटाने आई हूँ।

[इधर उधर घूमती है]

ओह ! हद हो गई ! यहाँ तक कि मेरे स्वामी भी अब दूसरे के हो गये। अच्छा, बैठूँ ज़रा।

[बैठ जाती है]

चकई धन्य है ! बिचारी चकवे से अलग होते ही मर तो जाती है। मुझे मौत भी तो नहीं है। अभागी मैं उसी आशा में अभी तक जीती हूँ।

[दासी फूल लिये आती है]

दासी

श्रीमती अवन्तिका कहाँ होंगी ?

[इधर उधर घूमती है और चारों ओर देखती है]

ओह ! वह बैठी हैं शिला पर । श्यामा लता के नीचे । साधारण पर सुन्दर वस्त्र पहने सोच क्या रही हैं बैठी । जान पड़ता है चाँद कुहरे में छिपा हो ! चलती हूँ उनके पास ।

[जाती है]

श्रीमती ! मैं बड़ी देर से ढूँढ़ रही हूँ आपको ।

वासवदत्ता

किस लिए ?

दासी

हमारी महारानी कहती हैं "श्रीमती ऊँचे कुल की हैं; वह इस काम में चतुर और कुशल भी हैं । उन्हीं से यह जयमाल बनवा लाओ ।

वासवदत्ता

किसके लिए री मैं जयमाल बनाऊँ ?

दासी

हमारी राजकुमारी के लिए !

वासवदत्ता

[अपने आप]

वाह ! यह भी हमारे हिस्से में पड़ा है ! ईश्वर भी बड़ा निर्दयी है ।

दासी

श्रीमती और कुछ न सोचें । वर मणिगृह में नहा रहा है, बस जल्दी से बना दें आप जयमाल ।

वासवदत्ता

[अपने आप]

और कुछ क्या सोचूँगी क्यों री !

[प्रकट]

देखा तूने वर को ?

दासी

हाँ, देखा क्यों नहीं ! राजकन्या के स्नेह के कारण और अपने कुतूहल के कारण मैं उसे देखने गई थी ।

वासवदत्ता

कैसा है वर ?

दासी

श्रीमती ! कहती तो हूँ मैंने ऐसा सुन्दर वर कभी देखा ही न था।

वासवदत्ता

सच ! सच री ? बड़ा सुन्दर है ?

दासी

साक्षात् कामदेवता-सा दीखता है।

वासवदत्ता

अच्छा—होगा।

दासी

होगा क्यों ?

वासवदत्ता

परपुरुष की बात करनी ठीक नहीं।

दासी

अच्छा, माला तो जल्दी से बना दीजिए।

वासवदत्ता

ला इधर।

दासी

यह लीजिए, श्रीमती !

वासवदत्ता

[फूलों में से चुनती हुई]

यह कौन सी पत्ती है री ?

दासी

यह सदा-सोहागिन नामक जड़ी है।

वासवदत्ता

[अपने आप]

इसे अधिक माला में गूँथूँगी—अपने और पद्मावती दोनों के शुभ के लिए।

[प्रकट]

और यह क्या है री ?

दासी

यह 'सौतडाहिनी' है, श्रीमती।

वासवदत्ता

इसका क्या काम ?

दासी

क्यों ?

वासवदत्ता

राजा की रानी तो मर चुकी है, अब इसका काम ?

[दूसरी दासी आती है]

दूसरी दासी

जल्दी कीजिए, जल्दी कीजिए श्रीमती ! वर सोहागिनों के साथ भीतर आँगन में जा रहा है।

वासवदत्ता

अच्छा, ले यह माला।

दासी

बड़ा सुन्दर बना है ! ले जाती हूँ इसे।

[दोनों दासियां जाती हैं]

वासवदत्ता

गई दोनों। ओह! बड़ा बुरा हुआ! मेरे स्वामी भी अब दूसरे के होगये! चलकर सो जाऊँ, तनिक दुख तो कम हो। पर नींद भला मुझे काहे को आवेगी!

[जाती है]

अंक चौथा

[विदूषक आता है]

विदूषक

[हर्ष से]

खूब मज़े में देखा मैंने वत्सराज का मंगल विवाह उत्सव। ओह! कौन जानता था कि इस प्रकार दुख-सागर में पड़कर हम इस भाँति आनन्द के दिन देखेंगे। क्या कहना है! इस समय महलों में ठाट से रहना अन्त:पुर के कुओं पर आनन्द से स्नान करना, मौज से मिठाइयाँ और स्वादिष्ट भोजनों पर हाथ फेरना--बस एकदम स्वर्ग की सैर है—कमी केवल अप्सराओं भर की है। हाँ! पर एक बात की है तकलीफ़—मेरा खाना ठीक पच नहीं रहा है, रात को मुलायम गद्दों पर भी नींद नहीं आ रही है। जान पड़ता है मुझे कोई

बीमारी हो रही है। जब भरपेट खाना नहीं होता, भरपेट सोना नहीं होता, तो इस जीने का सुख ही क्या?

[दासी आती है]

दासी

कहाँ गये वसन्तक शर्म्माजी?

[इधर-उधर देखती है]

अच्छा, यह हैं वसन्तक महाराज!

[उसके पास जाती है]

वसन्तक महराज, कब से ढूँढ़ रही हूँ आपको!

विदूषक

क्यों, ज़रूरत?—कहो।

दासी

हमारी महारानी ने पूछा है—जमाई महाराज स्नान कर चुके?

विदूषक

किस लिए पूछा है महारानी ने?

दासी

और किस लिए ? यही कि फूल और अंगराग उनके पास भेजा जाय ?

विदूषक

हाँ ! स्नान कर चुके हैं महाराज । सब कुछ ले आ सकती हो केवल भोजन छोड़कर ।

दासी

भोजन छोड़कर क्यों ?

विदूषक

क्या कहूँ ! बड़ी विपत है ! पेट में कुछ गड़बड़ हो रहा है ।

दासी

तो होने दो ।

विदूषक

अच्छा जा तू । मैं भी जाता हूँ महाराज के पास ।

[दोनों जाते हैं]

[पद्मावती साथियों के साथ आती है—साथ में वासवदत्ता भी है]

दासी

राजकुमारी ने प्रमोदवन में आने का क्यों कष्ट किया ?

पद्मावती

अरी ! मैं देखने चली आई थी कि सरीफ़े के पेड़ फूले हैं कि नहीं ?

दासी

हाँ, फूले हैं राजकुमारी ! ख़ूब लदे हैं फूलों से। ऐसा लगता मानो मूँगे मोतियों के बहुत से लटकन लटक रहे हों।

पद्मावती

सच री ! तो देर काहे को करती है ?

दासी

अच्छा, तनिक देर बैठें राजकुमारी इस पत्थर के आसन पर—मैं जाकर फूल बटोरे लाती हूँ।

पद्मावती

क्यों बहन बैठा जाय यहाँ ?

वासवदत्ता

अच्छा,

[दोनों बैठती हैं ।]

दासी

[फूल एकत्र करके]

लीजिए राजकुमारी, लीजिए ! मेरी अंजुली भर गई है सरीफ़े के फूलों से । ऐसे चमकते हैं मानो संखिया के कण चमकते हों ।

पद्मावती

[देखती है]

वाह ! बड़े सुन्दर फूल हैं ! देखो न बहन । देखती हो ?

वासवदत्ता

हाँ जी, हैं तो बड़े सुन्दर !

दासी

और ले आऊँ, राजकुमारी ?

पद्मावती

नहीं री ! और क्या होगा ?

वासवदत्ता

अजी रोकती क्यों हो ? लाने दो न और ।

पद्मावती

नहीं बहन, महाराज आकर यहाँ फूलों के ढेर देखेंगे तो अच्छा होगा न ?

वासवदत्ता

क्यों जी बहुत प्रेम करती हो महाराज से ?

पद्मावती

बहन ! यह बात नहीं, पर उनके न रहने पर मुझे बड़ा उदास लगता है ।

वासवदत्ता

[अपने आप]

ओह ! यह भी ऐसा कहती है ! मैं ही जानती हूँ जो मुझ पर बीतती है !

दासी

राजकुमारी का घुमा फिरा कर कहने का मतलब यह है कि 'मैं महाराज से प्रेम करती हूँ'।

पद्मावती

एक बात मेरे समझ में नहीं आती।

वासवदत्ता

सो क्या ? सो क्या ?

पद्मावती

क्या वासवदत्ता उतना ही महाराज को चाहती थी जितना मैं।

वासवदत्ता

इससे भी अधिक।

पद्मावती

तुम कैसे जानती हो ?

वासवदत्ता

[अपने आप]

महाराज का प्रेम मुझसे बार बार ग़लती करा बैठता है। अच्छा कह देती हूँ—

[प्रकट]

अगर अधिक प्यार न करती तो अपने घर-वालों को छोड़कर उसके साथ जाती ही क्यों ?

पद्मावती

हाँ, बहन ! यह बात तो है ।

दासी

राजकुमारी ! मौक़े से किसी दिन महाराज से कहना कि मैं भी वीणा बजाना सीख लूँगी ।

पद्मावती

मैंने कहा था एक दिन महाराज से ।

वासवदत्ता

कहा क्या महाराज ने ?

पद्मावती

कुछ बोले ही नहीं । केवल एक ठंढी साँस लेकर चुप रह गये ।

वासवदत्ता

इस चुप रहने का मतलब ?

पद्मावती

जान पड़ता है महाराज को रानी वासवदत्ता की सुध हो आई और कदाचित् अगर मैं न होती तो वे रो भी पड़ते।

वासवदत्ता

[अपने आप]

अगर ऐसी बात है तो मैं बड़ी भाग्यवान् हूँ।

[राजा विदूषक के साथ आते हैं]

विदूषक

ही! ही! ही! महाराज! बड़ा सुन्दर लग रहा प्रमोदवन, बन्धुजीव के पुष्प, तोड़ते समय, कैसे भूमि पर बिखर गये हैं। इधर से आइए, इधर से महाराज!

राजा

आया! आया, मित्र बसन्तक! अवन्ती जाकर जब मैंने अवन्तिकुमारी को देखा था—मेरे मन की विचित्र दशा थी—कामदेव ने बेरोक मुझ पर

अपने पाँचों बाण छोड़े थे—ये बाण अभी तक मेरे हृदय में कसक रहे हैं, यहाँ आकर उसने फिर मुझ पर आक्रमण किया है। पता ही नहीं चलता उसके पास यह छठा बाण कहाँ से आ गया ?

विदूषक

महारानी पद्मावती कहाँ गईं इस समय ? लतामंडप में गईं क्या ? नहीं, पर्वततिलक नामक पत्थर के चबूतरे पर बैठी होंगी, जो असना के फूलों को बिछाते ही बघम्बर की तरह दिखाई पड़ने लगता है। या छितवन की बारी में गई होंगी जिसमें तीखी सुगंध आती होगी। हो सकता है दारु पर्वत नामक चबूतरे पर आनन्द मनाती हों जिस पर पशु-पक्षियों के सुन्दर चित्र बने हैं।

[ऊपर देखता है]

ही ! ही ! ही ! ऊपर देखिए तनिक शरत् के आकाश में आगे बढ़ती हुई सारसों की सुन्दर पंक्ति

को। जान पड़ता है मानो बलराम की सुन्दर भुजा फैली हो। देख रहे हैं न, महाराज ?

राजा

देख रहा हूँ, मित्र! कभी लम्बी हो जाती है, कभी दो टुकड़े में बँट जाती है कभी ऊपर जाती है कभी नीचे। कभी कभी तो घूमती हुई सप्तर्षि तारे की तरह दिखाई पड़ने लगती है। केचुरी छोड़ते हुए साँप के उदर की भाँति निर्मल आकाश को कभी कभी सीमारेखा की भाँति यह बीच से दो टुकड़ों में बाँटती सी दिखाई पड़ती है।

दासी

देखिए राजकुमारी, देखिए! ऊपर सफ़ेद कमल की माला की भाँति यह सारसों की सुन्दर अवली आकाश में कैसी उड़ी जा रही है!

पद्मावती

अरे! महाराज आ रहे हैं! बहन, तुम्हारे सामने मैं महाराज से कैसे मिलूँ ? आओ, चमेली के कुंज में चली चलें।

वासवदत्ता

अच्छी बात है।

[जाती है]

विदूषक

महारानी पद्मावती ज़रूर यहाँ आकर लौट गई हैं।

राजा

कैसे जाना ?

विदूषक

देखिए न महाराज ! इन सरीफ़े के पेड़ों को जिनसे फूल चुने गये हैं।

राजा

बसन्तक ! इन फूलों का रंग तो बड़ा विचित्र है।

वासवदत्ता

[अपने आप]

बसन्तक का नाम सुनकर जान पड़ता है मैं फिर उज्जैनी पहुँच गई।

राजा

बसन्तक ! आओ, यहाँ पत्थर पर बैठकर पद्मावती की प्रतीक्षा करें।

विदूषक

अच्छा यही सही।

[बैठता और फिर खड़ा हो जाता है]

ही ! ही ! ही ! धूप तो बड़ी कड़ी है। चलो चमेली के कुंज में चलें।

राजा

अच्छी बात है। चलो फिर।

विदूषक

चलिए।

[दोनों चलते हैं]

पद्मावती

बसन्तक, सबको परेशान करेंगे। अब क्या किया जाय ?

दासी

राजकुमारी, इस लटकती हुई लता को हिला-कर जिस पर भँवरे मँडरा रहे हैं मैं महाराज को रोके देती हूँ।

पद्मावती

अच्छा ऐसा ही कर।

[दासी वैसा करती है]

विदूषक

अरे बाप रे ! ठहरिए महाराज, ठहरिए !

राजा

क्यों ? क्या हुआ ?

विदूषक

ये साले भँवरे मुझ पर टूट पड़े हैं।

राजा

ना मित्र, ऐसा नहीं। भँवरों को न छेड़ो। देखो, हमारी आहट पाकर भनभनाते हुए मधु-मत्त भँवरे भड़क उठेंगे जो सप्रेम अपनी प्रियाओं से

चिपटे हैं और हमारी भाँति वे भी अपनी पत्नियों से बिछुड़ जायँगे।

विदूषक

बहुत अच्छा, महाराज !

[दोनों बैठते हैं]

पद्मावती

बहुत अच्छा हुआ महाराज वहीं बैठ गये !

वासवदत्ता

[अपने आप]

बड़ी प्रसन्नता की बात है महाराज मज़े में हैं।

दासी

राजकुमारी, हम लोग एक प्रकार से बंद हो गई हैं। राजकन्या ! श्रीमती अवन्तिका की आँखों में आँसू उमड़ आये हैं।

वासवदत्ता

इन भँवरों के एकाएक उड़ने से मेरी आँखों में कास-कुसुम के पराग उड़कर पड़ गये हैं।

पद्मावती

हाँ, होगा ।

विदूषक

ओह ! यह प्रमोद वन उजाड़ सा जान पड़ता है । महाराज, एक बात पूछना चाहता हूँ, पूछ सकता हूँ ?

राजा

हाँ ! हाँ ! ख़ुशी से ।

विदूषक

किसे आप अधिक प्यार करते हैं—पहली रानी वासवदत्ता को या नई रानी पद्मावती को ?

राजा

यह पूछकर आप मुझे संकट में क्यों डालना चाहते हैं ?

पद्मावती

ओह ! महाराज सचमुच संकट में हैं !

वासवदत्ता

[अपने आप]

और अभागी मैं भी उसी भाँति !

विदूषक

मुझसे साफ़ साफ़ बतलाइए। संकट कैसा ? एक तो संसार में है ही नहीं दूसरी यहाँ नहीं है।

राजा

नहीं मित्र ! यह नहीं बतला सकता। आप व्यर्थ की बात पूछते हैं।

पद्मावती

कह तो दिया काफ़ी महाराज ने।

विदूषक

मैं क़सम खाकर सच कहता हूँ, महाराज, मैं किसी से कहूँगा नहीं। लीजिए मैं अपनी ज़बान काटे डालता हूँ।

पद्मावती

ओह ! व्यर्थ की बकवाद है ! इतना महाराज के कहने पर भी इसने मतलब न समझा ।

राजा

विवश न करो मित्र ! नहीं कह सकता ।

विदूषक

न बतलायेंगे आप ? अच्छा जब तक बतलायेंगे नहीं, आप यहाँ से उठने न पावेंगे—मैं आपको उठने न दूँगा ।

राजा

क्यों, ज़बरदस्ती ?

विदूषक

हाँ ! ज़बरदस्ती ।

राजा

अच्छा, देखें आपकी ज़बरदस्ती ।

विदूषक

क्षमा कीजिए, महाराज, अपराध हुआ । मित्र के नाते कहता हूँ मुझे कृपा कर बतला दीजिए !

राजा

बड़ी मुश्किल है ? अच्छा सुनो—रानी पद्मावती को यद्यपि उनके रूप, शील, गुणों के कारण मैं बहुत चाहता हूँ पर अभी तक रानी वासवदत्ता में लगे हुए मेरे मन को वह अपनी ओर नहीं खींच सकी ।

वासवदत्ता

[अपने आप]

बहुत हुआ ! बहुत हुआ ! परिश्रम का फल तो मिला । इसलिए छिपकर रहने में भी बड़ा लाभ है ।

दासी

राजकुमारी ! महाराज को सचमुच ऐसा नहीं कहना था ।

पद्मावती

नहीं री ! ऐसा न कह । महाराज बड़ा शील मानते हैं, नहीं तो अभी तक रानी वासवदत्ता को क्यों याद करते ?

वासवदत्ता

बहन ! अपने कुल के उचित बात कहती हो ।

राजा

अच्छा मित्र ! मैंने तो बतला दिया अब तुम्हारी बारी है । बतलाओ तुम्हारे विचार से कौन अच्छी है—पहले की वासवदत्ता या आजकल की रानी पद्मावती ?

पद्मावती

महाराज भी बसन्तक की भाँति पूछने लगे ।

विदूषक

यह सब फ़ज़ूल की बात है ! मैं दोनों का समान आदर करता हूँ ।

राजा

वाह मित्र ! मुझसे तो ज़बरदस्ती कहलवा लिया अब अपनी बेर हीला-हवाला करते हो ।

विदूषक

क्या मुझसे भी ज़बरदस्ती कहलवायेंगे आप ?

राजा

हाँ ! ज़बरदस्ती कहलवायेंगे ।

विदूषक

तब तो कहलवा चुके ।

राजा

अच्छा, क्षमा करो ब्राह्मण-देवता, माफ़ करो । अपनी ख़ुशी से कहो, अपनी मरज़ी से ही कहो ।

विदूषक

अच्छा, तो सुनिए महाराज ! मैं महारानी वासवदत्ता का बड़ा आदर करता था, नई महारानी पद्मावती में भी बहुत से गुण हैं । वह सुन्दर हैं युवती हैं, क्रोध-रहित हैं, उनमें अहंकार नाम-मात्र का नहीं है, वह चतुर हैं, बोल की मीठी हैं । वासवदत्ता में एक और भी गुण था—बढ़िया बढ़िया भोजन लेकर वह मुझे ढूँढ़ा करती थीं—कहाँ गये बसन्त महाराज ?

वासवदत्ता

[अपने आप]

ठीक ! बसन्तक ठीक ! खूब याद है तुम्हें ।

राजा

अच्छा, अच्छा बसन्तक ! मैं कहूँगा न यह रानी वासवदत्ता के सामने ।

विदूषक

अरे ! वासवदत्ता ? रानी वासवदत्ता कहाँ ? रानी को संसार छोड़े कितने दिन होगये !

राजा

[दुख से]

ठीक कहते हो मित्र, अब रानी वासवदत्ता कहाँ ? तुमने अपने परिहास से मेरे मन को ऐसा व्याकुल कर दिया कि पुराने अभ्यास के कारण बरबस मेरे मुँह से ये शब्द निकल पड़े ।

पद्मावती

सचमुच बड़ी मज़ेदार बातें हो रही थीं पर इस मूर्ख ने सारा मज़ा किरकिरा कर दिया ।

वासवदत्ता

[अपने आप]

चाहे जो कुछ हो मुझे तो अब विश्वास हो गया। आह ! क्या आनन्द है इस प्रकार छिपकर ऐसी बातें सुनने में !

विदूषक

धीरज धरिए, महाराज ! धीरज धरिए ! दैव पर किसी का बस है ? अब तो जो हुआ सो हुआ।

राजा

मित्र !—समझते नहीं मैं किस विपत्ति में हूँ। पुराने प्रेम को यकायक भुला देना कठिन है, बार बार ध्यान करने से दुख नया होता जाता है। बात यह है कि जब आदमी रो लेता है उसका मन ठिकाने हो जाता है और उसका चित्त शान्त हो जाता है।

विदूषक

आँसुओं से तो आपका चेहरा भीग गया है। अच्छा, जाकर थोड़ा जल मुँह धोने के लिए ले आऊँ।

[जाता है]

पद्मावती

बहन ! महाराज की आँखों पर आँसुओं का परदा पड़ा है । आओ, हम लोग यहाँ से निकल चलें ।

वासवदत्ता

हाँ, ठीक तो है—पर नहीं, तुम यहीं ठहरो । महाराज को इस प्रकार दुखी छोड़कर तुम्हारा जाना अनुचित होगा । मैं ही अकेली जाऊँगी ।

दासी

ठीक तो कह रही हैं श्रीमती अवन्तिका । आप जायँ महाराज के पास ।

पद्मावती

क्यों, सचमुच जाऊँ ?

वासवदत्ता

हाँ, बहन ! इसमें भी पूछना है ?

[जाती है]

[विदूषक आता है]

विदूषक

[कमल के पत्ते में पानी लिये हुए]

अरे ! महारानी पद्मावती यहाँ कैसे ?

पद्मावती

वसन्तक ! क्या है—हाथ में ?

विदूषक

हाथ में—महारानी जी—हाथ में—

पद्मावती

बोलो जी ! बोलते क्यों नहीं !

विदूषक

महारानी ! कास के फूलों का पराग हवा से उड़कर महाराज की आँखों में पड़ गया था इसी से उनका चेहरा आँसुओं से भीग गया है। कृपा कर आप यह मुँह धोने का जल उनके पास पहुँचा दें।

पद्मावती

[अपने आप]

चतुर मालिक का नौकर भी चतुर है।

[राजा के पास जाकर]

महाराज की जय हो! लीजिए मुख धोने का जल।

राजा

अरे! महारानी पद्मावती!

[वसन्तक से]

वसन्तक, यह क्या?

विदूषक

[राजा के कान में कुछ कहता है]

बात यह है—

राजा

वाह मित्र, वाह!

[मुँह धोता है]

पद्मावती! बैठो न।

पद्मावती

जैसी आज्ञा, महाराज !

[बैठ जाती हैं]

राजा

पद्मावती ! बात यह हुई, सुन्दरी ! कास के फूलों के चाँदनी से सफ़ेद पराग हवा से उड़कर मेरी आँखों में पड़ गये जिसके कारण आँसुओं से मेरा सारा चेहरा भीग गया ।

[अपने आप]

यह अभी हाल ही में आई है । अगर सच्ची बात कह दूँ तो इसे दुख होगा । माना कि पद्मावती का स्वभाव गंभीर है पर स्त्रियों में चंचलता स्वाभाविक होती है ।

विदूषक

महाराज ! जान पड़ता है महाराज मगधराज का विचार तीसरे पहर आपको अपने मित्रों से

परिचय कराने का है। आपस के सत्कार ही से तो प्रेम बढ़ता है। अब तो महाराज चलना ठीक होगा।

राजा

हाँ, जी ! ठीक कहते हो। गुणों में बढ़े चढ़े, नित्य औरों का सत्कार करनेवाले तो बहुत हैं पर किये गये सत्कार को माननेवाले बहुत कम मिलेंगे।

[सब जाते हैं]

अंक पाँचवाँ

[पद्मिनिका आती है]

पद्मिनिका

मधुकरिका, अरे मधुकरिका ! आती है जल्दी ?

[मधुकरिका आती है]

मधुकरिका

क्या है, री पद्मिनिका ? क्या काम है ?

पद्मिनिका

अरी ! तुझे नहीं मालूम राजकुमारी पद्मावती सिरपीड़ा से दुखित हैं ?

मधुकरिका

अरे बुरा हुआ !

पद्मिनिका

जाकर जल्दी से श्रीमती अवन्तिका से कहना तो। बस इतना ही कहना राजकन्या के सिर में दर्द है। वह अपने ही चली आवेंगी।

मधुकरिका

अरी! वह क्या करेंगी आकर?

पद्मिनिका

क्यों? इधर-उधर की अच्छी अच्छी कहानियाँ कहकर जी बहलावेंगी।

मधुकरिका

हाँ! ठीक तो है। राजकन्या का पलंग कहाँ लगाया गया है?

पद्मिनिका

नीले कमरे में बिछाया गया है। तू जा। मैं भी महाराज से कहने के लिए वसन्तक महाराज को ढूँढ़ने जाती हूँ।

मधुकरिका

अच्छी बात है।

[जाती है]

पद्मिनिका

[अपने आप]

अब वसन्तक, महाराज को कहाँ ढूँढूँ ?

[विदूषक आता है]

विदूषक

महारानी के वियोग से दुखी महाराज वत्सराज के हृदय में इस नवीन पद्मावती के पाणिग्रहण के कारण जगी हुई प्रेम की अग्नि इस विवाह के अत्यन्त सुखकर मंगल अवसर पर और भी भड़क उठी है।

[पद्मिनिका को देखता है]

अरी पद्मिनिका ! पद्मिनिका ! क्या है री ?

पद्मिनिका

वसन्तक महाराज, जानते नहीं महारानी पद्मावती सिर दर्द से परेशान हैं ?

विदूषक

नहीं तो। सच ? मुझे क्या मालूम ?

पद्मिनिका

अच्छा, महाराज से जाकर यह निवेदन करना। मैं भी सिर के लिए लेप लेकर जल्दी जाती हूँ।

विदूषक

कहाँ बिस्तर लगाया गया है महारानी पद्मावती का ?

पद्मिनिका

नीले कमरे में।

विदूषक

अच्छा, जा री ! मैं भी महाराज से कहने जाता हूँ।

[दोनों जाते हैं]

[राजा आते हैं]

राजा

अब तो फिर विवाह का भार सिर पर आ ही गया, पर अब भी मेरा मन उस बखान करने

योग्य अवन्ति-पुत्री की चिंता किया करता है जिसका कोमल शरीर लावणक की अग्नि में इस प्रकार नष्ट हो गया जैसे पाले में कोमल कमलिनी।

विदूषक

[आकर]

जल्दी आइए, महाराज! जल्दी आइए!

राजा

क्यों ? क्या है ?

विदूषक

महारानी पद्मावती सिर दर्द से परेशान हैं।

राजा

किसने कहा तुमसे ?

विदूषक

मुझसे पद्मिनिका ने कहा।

राजा

हा ! सुन्दर सुघड़ गुणी स्त्री पाकर मेरा शोक अब कुछ कम हुआ था—यद्यपि पुराना घाव अभी बिलकुल भरा न था। एक बार विपत्ति का धक्का खाकर मैं पद्मावती के विषय में भी डरता ही रहता हूँ। कहाँ हैं महारानी पद्मावती इस समय ?

विदूषक

नीले कमरे में।

राजा

अच्छा, रास्ता तो बतलाओ उसका।

विदूषक

ऐसे आइए, महाराज !

[दोनों घूमते हैं]

विदूषक

यही है नीला कमरा, महाराज ! चलिए।

राजा

आगे बढ़ो।

विदूषक

बहुत अच्छा।

[भीतर जाकर]

अरे बाप रे ! ठहरिए, ठहरिए, महाराज ! वहीं रहिए !

राजा

बात क्या है ?

विदूषक

चिराग़ की रोशनी में यह काला साँप ज़मीन पर लोटता दिखाई पड़ता है।

राजा

[भीतर जाता है और मुस्कराता हुआ देखता है]

अच्छा ! मूर्खराज तुमको यही सर्प दिखाई पड़ता है। वाह रे मूर्खराज ! दरवाज़े के तोरण से गिरकर ज़मीन पर पड़ी हुई लम्बी माला को साँप समझ

बैठे ! यही मन्द वायु में हिलकर साँप की तरह रेंग रही है।

विदूषक

[देखकर]

सच ! महाराज आप ठीक कहते हैं। अरे, यह तो साँप नहीं है।

[भीतर जाकर चारों ओर देखता है]

महारानी पद्मावती ज़रूर आकर लौट गईं।

राजा

मित्र ! जान पड़ता है अभी आईं ही नहीं।

विदूषक

कैसे जाना आपने ?

राजा

इसमें जानने की क्या बात है ? देखो न, बिस्तर कहीं से उलटा पुलटा नहीं है—जान पड़ता है अभी ही बिछाया गया है, न कहीं चद्दर सिकुड़ा है, न तकिये पर कहीं सिर रखने या सिर पर लगे

लेप का दाग़ पड़ा है और न कहीं रोगी के चित्त बहलाने के लिए कुछ मनोरंजन ही है। और फिर बीमार आदमी भला इतनी जल्दी अपने आप उठकर चला जायगा ?

विदूषक

तब आप इस पलंग पर थोड़ी देर बैठकर रानी की प्रतीक्षा करें।

राजा

अच्छी बात है।

[बैठता है]

मित्र ! मुझे तो नींद सता रही है। कोई कहानी कहो—

विदूषक

अच्छा, एक कहानी कहता हूँ। 'हुँ' कारी भरिएगा न, महाराज ?

राजा

हाँ !

विदूषक

उज्जैनी नाम की एक नगरी है उसमें बहुत से नहाने के तालाब हैं—।

राजा

क्या कहा उज्जैनी ?

विदूषक

आपको यह कहानी अच्छी नहीं लगती। अच्छा दूसरी कहता हूँ।

राजा

यह बात नहीं कि मुझे अच्छी नहीं लगती। बात यह है—उज्जैनी नाम सुनकर मुझे अवन्ति राजकुमारी की याद हो आई जिसने वहाँ से चलते समय अपने घरवालों की याद कर अपनी आँखों में भरे आँसुओं को मेरी गोद में बहाया था। न जाने कितनी बार संगीत सीखते समय उसकी आँखें मुझ पर ऐसी लगी रही हैं कि उसके हाथ जिससे मिज़राब छूट गये हैं सिर्फ़ हवा में चलते रहे हैं।

विदूषक

अच्छा, मैं दूसरी कथा कहता हूँ । ब्रह्मदत्त नाम का एक नगर था । वहाँ काम्पिल्य नाम का राजा था ।

राजा

क्या कहा ? क्या कहा ?

विदूषक

[फिर से कहता है]

राजा

मूर्ख ! ब्रह्मदत्त राजा था, काम्पिल्य नगरी थी ।

विदूषक

क्या राजा का नाम ब्रह्मदत्त था और काम्पिल्य नगरी थी ?

राजा

हाँ !

विदूषक

अच्छा, तनिक ठहर जायँ महाराज ! मैं होंठ किये लेता हूँ इसे। राजा ब्रह्मदत्त, नगरी काम्पिल्य।

[बार बार रटता है]

अच्छा, सुनिए महाराज। वाह ! क्या आप सो गये ? इस समय तो बड़ी सर्दी है। मैं जाकर अपनी रज़ाई ले आऊँ।

[जाता है]

[वासवदत्ता आती है। साथ में दासी है]

दासी

आइए श्रीमती ! आइए ! राजकुमारी के सिर में बड़ा दर्द है।

वासवदत्ता

कहाँ पलँग बिछाया गया है राजकुमारी का ?

दासी

नीले कमरे में लगा है बिस्तर।

वासवदत्ता

तो चल आगे ।

[दोनों चलती हैं]

दासी

यही नीला कमरा है, चलिए श्रीमती । मैं जाकर जल्दी से सिर में लगाने का लेप लिये आती हूँ ।

[जाती है]

वासवदत्ता

[अपने आप]

मुझसे सचमुच परमात्मा रुष्ट है ! महाराज का वियोग दशा में तनिक संतोष देनेवाली पद्मावती भी बीमार पड़ गई । अच्छा, चलूँ भीतर ।

[जाकर इधर-उधर देखती है]

ओह ! बड़ी लापर्वा हैं दासियाँ ! पद्मावती की तबीयत अच्छी नहीं है और उन सबने उसे अकेली केवल एक दीपक के भरोसे छोड़ दिया है ।

यह सो रही है पद्मावती। मैं बैठती हूँ—लेकिन नहीं! दूर बैठने से बुरा मानेगी। अच्छा, तो उसके पलँग ही पर बैठना ठीक होगा।

[बैठती है]

यह क्या? आश्चर्य्य की बात है, उसके समीप बैठने से मुझे अत्यन्त सुख हो रहा है। मज़े में सो रही है। बड़ी अच्छी बात है। उसका कष्ट निश्चय कम हो रहा है। क्या पलँग के एक किनारे लेटकर वह आलिंगन की इच्छा करती जान पड़ती है? अच्छा, तो मैं लेट जाऊँ इसके पास में।

[वैसा ही करती है]

राजा

[स्वप्न में बकता है]

वासवदत्ता!

वासवदत्ता

[एकाएक उठकर]

अरे ! यह तो महाराज हैं—पद्मावती नहीं ! देख तो नहीं लिया मुझे ? इससे तो आर्य्य यौगंधरायण की प्रतिज्ञा टूट जायगी।

राजा

हा अवन्ति-राज-कुमारी !

वासवदत्ता

ख़ैर ! महाराज नींद में बक रहे हैं। कोई है भी नहीं आस पास ! थोड़ी देर यहाँ ठहर कर अपनी आँखें तो ठंढी कर लूँ।

राजा

हा प्यारी ! हा शिष्या ! बोलती क्यों नहीं ?

वासवदत्ता

बोल तो रही हूँ, महाराज ! बोल रही हूँ !

राजा

क्या नाराज़ हो गई ?

वासवदत्ता

नहीं ! नहीं ! मैं तो प्रसन्न हूँ ।

राजा

अगर नाराज़ नहीं हो तो अपने आभूषण क्यों अलग फेंक दिये हैं ?

वासवदत्ता

इससे अच्छी और कौन बात है ?

राजा

क्या विरचिका का ध्यान करती हो ?

वासवदत्ता

[क्रोध से]

अरे ! जाने भी दो । यहाँ भी विरचिका ?

राजा

अच्छा, क्षमा कर दो मुझे विरचिका के लिए—

[हाथ फैलाता है]

वासवदत्ता

बहुत देर तक यहाँ ठहरी रही । कहीं कोई देख लेगा । अब चलना चाहिए । अच्छा, महाराज

का हाथ तो ठिकाने रख दूँ जो पलँग से नीचे लटक रहा है।

[वैसा करती है और जाती है।

राजा

[चौंक कर उठता है]

वासवदत्ता ! ठहरो ! ठहरो ! हाय, व्यर्थ दौड़कर मैं दरवाज़े से टकरा गया ! पता नहीं यह स्वप्न कहाँ तक सच्चा है ?

[विदूषक आता है]

विदूषक

वाह ! महाराज उठ गये ?

राजा

मित्र ! तुम्हें एक ख़ुश-ख़बरी सुनाता हूँ। वासवदत्ता मरी नहीं है—

विदूषक

हा ! वासवदत्ता ? रानी वासवदत्ता कहाँ ? उनको मरे तो बहुत दिन हो गये।

राजा

नहीं, मित्र ! ऐसा न कहो। जब मैं शय्या पर सो रहा था मुझे वह जगाकर अंतर्धान हो गई। निश्चय रुमण्वान् यह कह कर मुझे धोखा दे रहा था कि वह जलकर मर गई।

विदूषक

हा ! यह कहाँ संभव है ? आपने अवश्य स्वप्न में उन्हें देखा है। स्नानागारों का वर्णन सुनकर आप उन्हीं का ध्यान करते रहे होंगे।

राजा

अगर यह स्वप्न था, अच्छा होता कि मैं सदा यही स्वप्न देखा करता—यदि यह भ्रम था, अच्छा हो यदि मैं सदा ऐसे भ्रम में पड़ा रहूँ।

विदूषक

महाराज ! इस नगर में अवन्तिसुन्दरी नाम की एक परी रहती है। आपने उसी को देखा होगा।

राजा

नहीं, मित्र ! नहीं ! आँख खुलने पर मैंने उसकी अंजन-रहित आँखें और खुले केश देखे हैं जो उसकी सतीत्व की रक्षा कर रहे हैं। और, मित्र, यह देखो, यह बाहु जिसे उसने घबराहट में कस कर पकड़ा था अभी तक रोमांचित है—यद्यपि नींद में ऐसा हुआ था।

विदूषक

व्यर्थ की बातें मत सोचिए, महाराज ! आइए, आइए, चलिए भीतर महल में।

[कंचुकी आता है]

कंचुकी

महाराज की जय हो ! महाराज दर्शक ने कहला भेजा है कि आपके मंत्री रुमण्वान्, आरुणी पर चढ़ाई करने के लिए भारी सेना लेकर आये हैं और मेरे भी हाथी, घोड़े, पैदल और रथ की सेनाएँ तैयार हैं। महाराज तैयार हो जायँ।

आपके शत्रुओं में फूट हो गई है। प्रजा आपके गुणों पर प्रसन्न है और आपमें विश्वास रखती है। सेना की अनुपस्थिति में घर की रक्षा का प्रबंध कर लिया गया है। शत्रु को नाश करने के निमित्त जो कुछ चाहिए ठीक है। हमारी सेनाएँ गंगा पार भी पहुँच चुकी हैं और वत्सों का देश अब आपके अधीन है।

राजा

[उठता है]

वाह! बड़ी अच्छी बात है। अब मैं भी दुष्ट आरुणी पर चढ़ाई करता हूँ और हाथी घोड़ों से भरे हुए समुद्र-रूपी रण-सागर में बाणों की बाढ़ से शत्रुओं को नष्ट करता हूँ।

[सब जाते हैं]

अंक छठा

[कंचुकी आता है]

कंचुकी

अरे ! कौन है यहाँ स्वर्ण-द्वार के पहरे पर ?

[प्रतीहारी आती है]

प्रतीहारी

मैं हूँ पहरे पर, विजया। क्या काम है ?

कंचुकी

वत्सदेश को फिर से प्राप्त करनेवाले प्रतापी महाराज उदयन से निवेदन करो कि महाराज महासेन का भेजा हुआ रैभ्यस कंचुकी और महारानी अङ्गारवती की भेजी हुई देवी वासवदत्ता की दाई वसुन्धरा आई है। दोनों द्वार पर मिलने को खड़े हैं।

प्रतीहारी

इस संदेश के लिए तो इस समय अवसर नहीं है ।

कंचुकी

अवसर क्यों नहीं है ?

प्रतीहारी

बात यह है—महाराज के पूरबी प्रासाद में कोई वीणा बजा रहा था। उसे सुनकर महाराज ने कहा 'जान पड़ता है कोई घोषावती बजा रहा है।'

कंचुकी

तब ? तब ?

प्रतीहारी

तब उसके पास जाकर महाराज ने पूछा, 'तुम्हें यह वीणा कहाँ मिली ?' उसने कहा, 'मैंने इसे नर्मदा तट पर एक झाड़ी में पड़ा पाया है। यदि महाराज को काम हो तो इसे अपने पास रखें।' वीणा उससे लेते ही महाराज मूर्च्छित हो गये। फिर होश आते ही महाराज रोते हुए कहने लगे

'घोषावती ! तुझे तो मैं पा गया पर उसका पता नहीं है।' भला ऐसी हालत में मैं तुम्हारा समाचार कैसे जाकर कहूँ ?

कंचुकी

अरी ! जाकर कह तो यह उसी से संबंध रखता है।

प्रतीहारी

हाँ ! अच्छा तो मैं अभी जाकर कहती हूँ। अरे ! महाराज तो पूरबी प्रासाद से उतर कर इधर ही आ रहे हैं ! जाकर निवेदन करती हूँ।

कंचुकी

अच्छा, यही सही।

[दोनों जाते हैं]

[राजा और विदूषक आते हैं]

राजा

ऐ मधुर शब्दवाली ! तूने कभी महारानी के वक्ष:स्थल पर और गोद में आराम किया है। कैसे तुझसे वह वनवास सहा गया जहाँ पर चिड़ियाँ तुझ पर धूल फेंकती थीं ?

हाय ! घोषावती ! तू बड़ी कठोर है। नहीं तो बेचारी महारानी का तनिक भी तुझे ख्याल न आता, जो तुझे अपने बगल में दबाकर चलती थीं ? कैसे तू उन आलिंगनों को भूल गई जो थक जाने पर तुझे मिलते थे ? मेरे विरह में वह तुझे बजाया करती थीं। कभी कभी बजाते समय वह कुछ कह भी बैठती थीं, कभी कभी मुसकराती भी थीं— यह सब तू कैसे भूल गई ?

विदूषक

महाराज ! बहुत हुआ, अब भूल जाइए इन सबको।

राजा

मित्र, नहीं ! इस घोषावती ने मेरी सोई हुई विरह जगा दी। हा ! उसका कहीं पता नहीं जिसे यह घोषावती इतनी प्यारी थी। वसन्तक ! जल्दी से जाकर कारीगरों से इसके तार तो कसा कर लाओ।

विदूषक

बहुत अच्छा, महाराज !

[वीणा लेकर जाता है]

[प्रतीहारी आती है]

प्रतीहारी

जय हो महाराज की ! महाराज महासेन का कंचुकी रैभ्यस और महारानी अङ्गारवती की भेजी हुई देवी वासवदत्ता की दाई द्वार पर खड़ी है।

राजा

तो देवी पद्मावती को यहाँ लिवा लाओ।

प्रतीहारी

बहुत अच्छा, महाराज !

[जाती है]

राजा

कैसे, महाराज महासेन को यह सब समाचार इतने शीघ्र मिल गया ?

[प्रतीहारी और पद्मावती आती हैं]

प्रतीहारी

आइए, राजकुमारी ! पधारिए !

पद्मावती

महाराज की जय हो !

राजा

देवी पद्मावती ! मालूम है न कि महासेन के पास से रैभ्यस कंचुकी और महारानी अङ्गारवती की भेजी हुई वसुन्धरा नाम की देवी वासवदत्ता की दाई आई हैं। ये मिलने के लिए द्वार पर प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पद्मावती

महाराज ! अपने बन्धु-बान्धवों का हाल-चाल सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।

राजा

देवी वासवदत्ता के पीहर वालों को अपना बन्धु समझना उचित ही है। बैठो पद्मावती। क्यों ? बैठोगी नहीं ?

पद्मावती

महाराज क्या मुझे यहाँ बैठाकर उन लोगों से मिलेंगे ?

राजा

इसमें हरज ही क्या है ?

पद्मावती

महाराज की मैं दूसरी रानी हूँ। यह बात उन्हें कहीं बुरी लगे !

राजा

पर जिनसे तुम मिल सकती हो उनसे न मिलना अनुचित होगा न ? इसलिए आओ बैठो।

पद्मावती

जैसी आपकी आज्ञा !

[बैठ जाती है]

महाराज ! मैं यह जानने के लिए परेशान हूँ कि माता और पिताजी ने क्या कहा होगा।

राजा

पद्मावती ! ठीक कहती हो। मेरे भी जी में यही उठती है कि वे न जाने क्या कहें। मैं उनकी पुत्री को भगा लाया—पर उसकी रक्षा न कर सका। मुझे तो ऐसा डर लग रहा है जैसे किसी सुशील पुत्र को दुर्भाग्यवश पिता के विरुद्ध अपराध हो जाने पर लगता है।

पद्मावती

जिसका दिन पूरा हो गया है उसे कौन रोक सकता है ?

प्रतीहारी

महाराज ! कंचुकी और दाई द्वार पर खड़े हैं।

राजा

जल्दी उन्हें यहाँ लिवा लाओ।

प्रतीहारी

जो आज्ञा महाराज !

[जाती है और दोनों को लेकर आती है]

कंचुकी

संबंधी के राज में आकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, पर राजकन्या की याद आने पर मुझे बड़ा दुख होता है। हा दैव ! यदि शत्रुओं ने राज्य न छीन लिया होता तो राजकुमारी अवश्य कुशल से रहतीं।

प्रतीहारी

यह हैं महाराज, आइए इधर।

कंचुकी

जय हो महाराज की !

दाइ

जय हो महाराज की !

राजा

कहिए, राजाओं को बनाने बिगाड़नेवाले—हमारे संबंधी महाराज मगधराज तो आनन्द से हैं ?

कंचुकी

हाँ, महाराज, बहुत अच्छी तरह से हैं। आप लोगों का कुशल-समाचार पूछा है।

राजा

[आसन से उठकर]

मेरे लिए क्या आज्ञा दी है ?

कंचुकी

वैदेही-पुत्र के योग्य ही यह बात है। महाराज, आप विराजें। महाराज महासेन ने कहलाया है—

राजा

हाँ, कहिए क्या आज्ञा भेजी है ?

[बैठता है]

कंचुकी

महाराज ने कहा है कि उन्हें इस पर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि शत्रुओं के हाथों से आपने

अपना राज्य छीन लिया। कादर और कमज़ोर लोग सदा हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। उद्यमी पुरुष ही राज-भोग करते हैं।

राजा

यह सब महाराज महासेन की कृपा का फल है। एक बार पराजित करके मुझे अपने पुत्रों की भाँति रखा, पर मैं उनकी कन्या को केवल भगा ही नहीं लाया वरन् उसकी रक्षा भी न कर सका। अपनी कन्या की मृत्यु सुनकर भी उन्होंने मुझसे नाता नहीं तोड़ा। क्या यह महाराज ही की कृपा का फल नहीं है कि मुझे वत्सदेश फिर शत्रुओं से वापस मिला है ?

कंचुकी

महाराज ! मैंने आपको महाराज महासेन का संदेश सुना दिया, महारानी का संदेश दाई वसुन्धरा कहेगी।

राजा

हा माता ! सोलह रानियों में पटरानी—नगर की देवी—मेरी माता तो आनन्द से हैं। हमारे बिदाई के समय उन्हें कितना दुख हुआ था।

दाई

महारानी मज़े में हैं। उन्होंने आपका कुशल-क्षेम पूछा है।

राजा

कुशल-क्षेम ? कुशल-क्षेम तो सब है ही !

[आंसू पोंछता है]

दाई

महाराज ! अधिक सोच न कीजिए।

कंचुकी

धीरज रखिए, महाराज ! जिस पर आपका ऐसा स्नेह है वह वासवदत्ता मर कर भी अभी जीवित है। जब दिन पूरे हो जाते हैं तो मौत का हाथ कौन पकड़ सकता है ? जब रस्सी टूट गई तो घड़े

को कौन रोक सकता है ? यही स्थावर-जंगम सबका हाल है। अपने समय पर मरते हैं, अपने समय पर पैदा होते हैं।

राजा

नहीं, ऐसा न कहिए। महासेनकुमारी, मेरी शिष्या—मेरी प्रिया थी। क्या मैं उसे इसलिए भूल सकता हूँ कि वह अब इस लोक में नहीं है ?

दाई

महारानी ने कहा है वासवदत्ता तो अब है नहीं, पर फिर भी तुम मेरे लिए वैसे ही हो जैसे हमारे गोपालक और पालक। हम लोगों ने पहले ही से तुम्हें अपना दामाद बनाना निश्चय कर लिया था। इसी मतलब से हम लोग तुम्हें उज्जैनी ले आये थे और वीणा सिखाने के बहाने वासवदत्ता को बिना अग्नि को साक्षी किये ही तुम्हारे हाथ सौंप दिया था। अपनी चंचलता के कारण बिना विवाह किये ही तुम उसे लेकर भाग खड़े हुए। तब

हम लोगों ने तुम दोनों का चित्र बनवा कर विवाह-कार्य्य सम्पादन किया। वही चित्र तुम्हारे पास भेजती हूँ। इसे देखकर अब शान्तिलाभ करो।

राजा

माताजी के योग्य ही ये प्रेमभरी, कृपापूर्ण बातें हैं। यह सन्देशा मुझे सैकड़ों राज्यों से भी प्यारा है। अपराधी होने पर भी मेरे ऊपर उनका स्नेह तो ज्यों का त्यों है।

पद्मावती

महाराज, मैं चित्र में लिखे गुरुजनों का दर्शन करना चाहती हूँ।

दाई

देखिए, अवश्य देखिए, राजकुमारी!

[चित्र देती है]

पद्मावती

[देखकर]

अरे! यह तो ठीक अवन्तिका जैसी लगती है।

[प्रकट]

महाराज, क्या यह बहन वासवदत्ता का सच्चा चित्र है ?

राजा

चित्र नहीं। मुझे तो साक्षात् वही जान पड़ती है। हा! ऐसे सुन्दर रूप पर ऐसी दारुण विपत्ति। हा! कैसे यह सुन्दर मुखड़ा उस अग्नि में भस्म हुआ होगा!

पद्मावती

महाराज का चित्र देखूँ तो पता चल सकता है कि देवी वासवदत्ता का चित्र ठीक बना है वा नहीं।

दाई

देखिए, राजकुमारी, देखिए!

पद्मावती

[देखकर]

महाराज का चित्र तो बहुत सच्चा बना है। इससे तो पता चलता है कि दूसरा भी अवश्य ठीक बना होगा।

राजा

देवी ! मैं देखता हूँ चित्र देखकर एक बार तुम प्रसन्न, फिर कुछ व्यथित सी दिखाई पड़ीं। बात क्या है ?

पद्मावती

महाराज ! इसी चित्र की तरह ठीक ठीक एक स्त्री इसी महल में रहती है।

राजा

क्या, वासवदत्ता की भाँति ?

पद्मावती

हाँ, महाराज !

राजा

तो जल्दी से उसे यहाँ बुलवाओ।

पद्मावती

महाराज ! मेरे विवाह के पूर्व एक ब्राह्मण मेरे पास उसे यह कहकर छोड़ गया था कि यह मेरी बहन है। उसका पति परदेश में है, इसलिए वह पर-पुरुष के सामने नहीं आती।

राजा

[अपने आप]

अगर ब्राह्मण की बहन है तो कोई दूसरी होगी। संसार में बहुत ऐसे लोग दिखाई पड़ते हैं जो एक दूसरे से देखने में मिलते-जुलते हैं।

[प्रतीहारी आती है]

प्रतीहारी

जय हो महाराज की ! उज्जैनी का रहनेवाला एक ब्राह्मण द्वार पर खड़ा है। वह कहता है 'मैंने अपनी बहन को महारानी के पास रख छोड़ा था। उसे लेने आया हूँ।'

राजा

वही ब्राह्मण तो नहीं है, पद्मावती ?

पद्मावती

वही तो जान पड़ता है।

राजा

महल की प्रथा के अनुसार उचित आदर के साथ उसे यहाँ शीघ्र लिवा लाओ।

प्रतीहारी

जैसी महाराज की आज्ञा !

[जाता है]

राजा

पद्मावती ! तुम भी उसे लिवा लाओ ।

पद्मावती

जैसी आज्ञा महाराज की !

[जाती है]

[प्रतीहारी के साथ यौगन्धरायण आता है ।]

यौगन्धरायण

[अपने आप]

ओह ! महाराज के हित के लिए ही मैंने महारानी को छिपाया था । सच पूछो तो उनके भले ही के लिए मैंने यह सब काम किया था । परन्तु—यद्यपि मेरे प्रयत्नों का फल अच्छा ही हुआ पर मेरे मन में यह शंका उठती है कि महाराज न जाने क्या कहें ?

प्रतीहारी

आइए श्रीमान् ! यह बैठे हैं महाराज ।

यौगन्धरायण

[समीप जाकर]

जय हो आपकी !

राजा

अरे ! यह वाणी तो मुझे कभी सुनी सी जान पड़ती है। ब्राह्मण देवता ! क्या आप ही अपनी बहन को पद्मावती के पास धरोहर छोड़ गये थे ?

यौगन्धरायण

क्यों ? मैं ही छोड़ गया था ।

राजा

आपकी बहन को शीघ्र लिवा लाओ ।

प्रतीहारी

बहुत अच्छा, महाराज !

[जाती है]

[पद्मावती, और अवन्तिका आती हैं]

पद्मावती

आओ, बहन ! आओ ! तुम्हें खुश-खबरी सुनाती हूँ ।

अवन्तिका

हाँ ! हाँ ! कैसी ख़ुश-ख़बरी ?

पद्मावती

तुम्हारे भाई आये हैं ।

अवन्तिका

धन्य भाग्य ! मेरी सुध तो ली ।

पद्मावती

[राजा के पास जाकर]

जय हो महाराज की ! यही वह धरोहर है ।

राजा

अच्छा, सौंप दो उसे ब्राह्मण देवता को । पर धरोहर सबके सामने सौंपना चाहिए । इसलिए रैभ्यस और दाई वसुन्धरा के सामने ही ऐसा करना ठीक होगा ।